शोध प्रबन्ध की संक्षिप्तिका

उत्तर प्रदेश में गंगा–जमुना के दोआब के अधोभाग में स्थित कानपुर सांस्कृतिक जग्त में सदैव अग्रणी रहा है गंगर के किनारे बसे इस नगर का इतिहास इसके स्थापना दिवस 24 मार्च सन् 1803 से ही माना जाता है।

स. प्रथम अध्याय के अन्तर्गत,कानपुर का नामकरण, कानपुर की भौगोलिक स्थिति धार्मिक, ऐतिहासिक एवं व्यवसायिक पृष्ठभूमि एवं कानपुर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विवरण दिया गया है 19वीं शताब्दी के अन्त तक कानपुर ने एक उद्योग नगरी का रूप धारण कर लिया जिसका श्रेय ब्रिटिश सरकार को और अन्य नगरो से यहाँ आकर बसे व्यवसायियों को जाता है स्न 1857 की स्वंतत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान ने कानपुर को देश के ऐतिहासिक मानचित्र पर लाकर खड़ा कर दिया है सन् 1850 से 1900 के मध्य कानपुर में लोककला का प्रचार बहुत अधिक था।

रे. द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत कानपुर में संगीतज्ञों का आगमन एवं उनके परिचय का विवरण दो भागों में दिया गया है। रे.स. सन् 1857 के बाद से 20वीं शताब्दी के मध्य तक। रे. रे. 20वीं के शताब्दी के मध्य से 20वीं शताब्दी के अन्त तक इस अवधि में पं0 चिन्तामणि मिश्र श्री पुत्तू पाण्डे का नाम ध्रुपद गायन के लिये प्रसिद्ध है। 1916 में सबसे पहले ग्वालियर घराने के संगीतज्ञ श्री सोनू भावे कानपुर में आकर बसे। सन् 1918 में ठाकुर जयदेव सिंह और ग्वालियर घराने के संत श्रीनानू भइया तैलंग यहाँ आकर बसे। सन् 1927 में पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के द्वारा उनके शिष्य पं0 शंकर श्रीपाद बोडस को संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु

कानपुर में बसाया गया सन् 1930 में नारायण महादेव जोशी और शेषगिरि जोशी ग्वालियर घराने के दो संगीतज्ञ कानपुर आकर बसे। एक समय ऐसा आया जब कानपुर संगीत का गढ़ माना जाने लगा। 20वीं0 शताब्दी के मध्य तक कानपुर में मर्धन्य कलाकारों, संगीतज्ञों एवं आचार्यगणों से कानपुर परिपूर्ण हो गया। 20वीं0 शताब्दी के मध्य से पं0 लालमणि मिश्र आचार्य बृहस्पति, भीष्म देव वेदी जैसे संगीतज्ञ कानपुर आकर बसे।

ग. **तृतीय अध्याय** के अन्तर्गत कानपुर में अन्य नगरों से आकर बसे गायकों का संगीतिक योगदान एवं कानपुर में उनके द्वारा स्थापित परम्परा का विवरण लिया गया है।

म. **चतुर्थ अध्याय** में कानपुर में बाहर से आकर बसे गायकों की सांगीतिक परम्परा का विश्लेषण किया गया है। कानपुर में नानूभइया जी का शिष्य समुदाय बहुत बड़ा है। उनके पुत्र श्री कृष्ण राव तैलंग एवं डा0 गंगाधर राव तैलंग उच्च कोटि के गायक हुए और कानपुर में ग्वालियर घराने की गायकी का बहुत प्रचार–प्रसार किया। पं0 शंकर श्रीपाद बोडस के पुत्र पं0 काशीनाथ बोडस एवं उनकी पुत्री श्रीमति वीणा सहस्त्रबुद्धे ने अपनी गायन परम्परा का कानपुर में बहुत प्रचार–प्रसार किया। श्री अफजालहुसैनखाँ निजामी रामपुर–ग्वालियर–सहसवान घराने के प्रसिद्ध कलाकार एवं संगीत गुरू है उन्होने कानपुर में लगभल 300 शिष्य तैयार किये।

प. **पंचम अध्याय** में कानपुर में संगीत के आश्रयदाताओं का विवरण किया गया है।

ध. **षष्ठम अध्याय** में कानपुर में संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु शिक्षण संस्थाओं विधालयों एवं विश्वविधालयों में संगीत के प्रारम्भ का विवरण दिया गया है।

नि. **सप्तम अध्याय** में वर्तमान में कानपुर में गायन परम्परा, गायकों का परिचय एवं उनके संगीतिक योगदान का विवरण दिया गया है।

सं अष्टम अध्याय उपसंहार